E-Journal
January to March 2017
U.G.C. Journal No. 64728

RNI No. – MPHIN/2013/60638
ISSN 2320-8767, E-ISSN 2394-3793
Impact Factor - 4.710 (2016)

Naveen Shodh Sansar

(An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
(U.G.C. Approved Journal)

नवीन शोध संसार

Editor - Ashish Narayan Sharma

Office Add. "Shree Shyam Bhawan", 795, Vikas Nagar Extension 14/2, **NEEMUCH** (M.P.) 458441, (INDIA)
Mob. 09617239102, **Email** : nssresearchjournal@gmail.com, **Website** www.nssresearchjournal.com

अनुक्रमणिका/Index

01. अनुक्रमणिका /Index 02
02. केन्द्रीय सम्पादक मण्डल/सम्पादकीय सलाहकार मण्डल/ निर्णायक मण्डल 13/14/15
03. आम और खास के जनजातीय सन्त बोंदरू (डॉ. मधुसूदन चौबे) 17
04. ग्राम सिकारा जिला-सिवनी का आर्थिक-सामाजिक अध्ययन (डॉ. राजेश शामकुंवर) 19
05. परचरीकार सन्त खेमदास – एक अध्ययन (डॉ. मधुसूदन चौबे) 21
06. कृष्ण भक्त सन्त लालदास – जीवन एवं शिक्षाएँ (डॉ. मधुसूदन चौबे) 23
07. सामाजिक विद्रूपताओं का महाग्रंथ – रागदबारी (डॉ. वारिश जैन) 25
08. गायकार सन्त धनजीदास और उनका योगदान (डॉ. मधुसूदन चौबे) 27
09. Manufacturing Of Yarn From Some Natural Fibres Of Himalayan Origin And Their Blends 29
(Sambaditya Raj, Prof. Himadri Ghosh, Dr. Prabir Kumar Choudhuri)
10. भारतेंदुकालीन हिंदी नवजागरण का समीक्षात्मक अध्ययन (सोनिया राठी) 32
11. Enhancing Beauty of Khadi for Apparel through Clamp Dyeing 37
(Meghshyam Gurjar, Prof. Himadri Ghosh)
12. बालश्रमिकों की स्थिति एवं इनके हित के लिये किये जा रहे प्रयासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन 40
(सागर जिले के संदर्भ में) (सीमा सिंह, डॉ. शैलजा दुबे)
13. मध्यप्रदेश राज्य सहकारी कृषि और ग्रामीण विकास बैंक के वित्तीय विवरणों का विश्लेषण (डॉ. निधि वाडेकर)... 43
14. ग्रामीण विकास में उत्पन्न समस्याओं का समग्र अध्ययन (डॉ. सावित्री पाटीदार)..... 45
15. बैगा जनजाति में सामाजिक परम्परा (सीमा सिंह, डॉ. शैलजा दुबे) 47
16. मध्यप्रदेश राज्य सहकारी कृषि और ग्रामीण विकास मर्यादित बैंकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन (डॉ. निधि वाडेकर) . 49
17. ग्रामीण क्षेत्रों के विकास में पंचायतों का योगदान (डॉ. सावित्री पाटीदार) 51
18. मध्य प्रदेश के प्रमुख चित्रित शैलाश्रय (डॉ. उमा त्रिपाठी)..... 54
19. रामचरित मानस में वर्णित मानव मूल्यों के प्रसंगो का अध्ययन (डॉ. रामरतन साहू, रंगनाथ यादव, श्रीमती मंजू साहू) 57
20. विज्ञापन कला की उपयोगिता एवं महत्वता- एक समीक्षात्मक अध्ययन (डॉ. ऋचिका शर्मा)..... 60
21. रायगढ़ जिले में स्वाधीनता की लड़ाई (डॉ. रामरतन साहू) 64
22. Scholastic Achievement In Relation To Self Concept of B.Ed. Student Teachers of Mandsaur 67
& Neemuch District (Dr. Nisha Maharana, Yogita Somani)
23. मानवता एवं शौर्य के प्रतीक छत्तीसगढ़ के प्रथम शहीद वीर नारायण सिंह (बिंझवार जनजातीय के विशेष संदर्भ में) (मंजू साहू) . 70
24. उत्तररामचरितम् में जीवविज्ञान (डॉ. वेद प्रकाश मिश्र, रीना देवांगन) 72
25. Study on Hi-Tech Vegetables Production Trends and Potential Market for Excel Crop Care Ltd. 77
(Tarannum Hussain, Shahbaaz Sheikh)
26. लोक कल्याणकारी राज्य में ईसाई मिशनरियो की भूमिका (छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में)..... 84
(डॉ. संध्या जायसवाल, पूर्णिमा मानिकपुरी)
27. History of Female Procession Artist from Sir J.J.School of Art (Douglas M. John, Dr. Pushpa Dullar) 86
28. विक्रमोर्वशीयम् में जीव विज्ञान (डॉ. वेद प्रकाश मिश्र, रागनी कश्यप) 91
29. Procession paintings of Mumbai and the Innovation of Revival Art (Douglas M. John) 95
30. Application of Dabu Mud resist Printing and Indigo Dye on Khadi Fashion Accessories 100
(Meghshyam Gurjar, Prof. Himadri Ghosh)
31. Innovation in traditional Namda Handicraft (Sharmila Gurjar, Prof. Himadri Ghosh) 104
32. Comparsion Of Leg Strength Among Throwers And Jumpers In Athletics 108
(Talvinder Singh Aoulak,Jai Shankar yadav)

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal) (U.G.C. Jr. No. 64728)
ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Impact Factor - 4.710 (2016) January to March 2017, E - Journal

रामचरित मानस में वर्णित मानव मूल्यों के प्रसंगो का अध्ययन

डॉ. रामरतन साहू* रंगनाथ यादव ** श्रीमती मंजू साहू ***

शोध सारांश – गोस्वामी तुलसीदास की रामचरित मानस मानवीय मूल्यों के मंडप में अन्त्योदय का अनुष्ठान है। सौहार्द्र की स्याही से अंकित अपनत्व के अनुच्छेदो में, सर्वोदय का संविधान है। रामचरित मानस यानी वसुधैव कुटुम्बकम् में पूरा विश्वास तुलसीदास कहने को भले ही स्वान्तः सुखाय कह रहे हो लेकिन यह सच है कि उनकी लेखनी सर्वजनहिताय की धुरी पर ही घूमती है। आदर्श राम को यानी मानव मूल्यों को ही चूमती है, परोपकार की पैरवी करती हो, दुश्मनी का दल मल सुखाती हो , द्वेष का दावानल बुझाती हो, कलह का कीचड़ हटाती हो, कटुता की कालिख मिटाती हो, सद्भाव के सुमन खिलाती हो, सहिष्णुता की सुगन्ध फैलाती हो, अपनत्व की अलख जगाती हो, चिन्तनयुक्त और चैतन्य दिखाती हो, भ्रातृत्व के भाष्य लिखती हो, ऐसी लेखनी का हर शब्द समाज के उद्धार के लिए होता है और वह रचनाकार लोकमंगल का कारक होता है। तुलसीदास लोकमंगल के ध्वजवाहक हैं। राम चरित मानस के नायक मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम की राजव्यवस्था सामाजिक सौहार्द्र और भाईचारा का ताना-बाना ही था। श्रीराम के बाल्यावस्था से लेकर सिंहासन के त्याग तक और वनवास से लेकर लंकाकाण्ड तक जो भी कथा है उसमें भाईचारा, प्रकृति-पर्यावरण की रक्षा, दलित-आदिवासियों के साथ समभाव, पक्षियों के प्रति संवेदनशीलता,वन्य जीवों के लिए दया, नारियों का सम्मान, ऋषि मुनियों के प्रति आभार पग-पग पर परिलक्षित होता है।

प्रस्तावना – दशरथ के द्वारा राम के राज्याभिषेक की घोषणा पर कैकयी ने कलह कर दिया। परिणाम स्वरूप राम को वन जाने के लिए दशरथ ने भारी मन से आदेश दिया। राम की सत्ता के प्रति निर्लिप्तता और सिंहासन त्याग का इससे बड़ा उदाहरण क्या हो सकता है कि जैसे ही राम को वनवास का आदेश मिला, उन्होने तुरंत राज्याभिषेक के लिए हुए अलंकरणों एवं वस्त्रों को वैसे ही उतार देता है जैसे तोता अपने पुराने पंख उतार देता है या फेंक देता है। ऐसा करने के बाद राम वन को वैसे ही चल दिये जैसे पथ में पथिक वृक्षों-वस्तुओं को दर किनार करके चला जाता है। राम के द्वारा एक पल की देर किये बिना सिंहासन का त्याग और वह भी इसलिए कि कैकयी ने अपने पुत्र भरत के लिए राज माँगा था, यह राम के भ्रातृ-प्रेम का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है, जिसका आज तक कोई सानी नहीं है।

आज के दौर में सत्ता और सिंहासन पर बने रहने के लिए क्या-क्या हथकंडे नहीं अपनाये जाते ? मर्यादा पुरुषोत्तम राम का सिंहासन त्याग एक संदेष है। हकीकत में राम, उपदेष नहीं संदेश है , राम, व्यक्ति नहीं विचार है, राम, वर्ण नहीं संस्कार हैं, राम, उन्माद-विवाद नहीं संवाद है, राम, समाज के लिए प्रेरणा है। राम, नारा नहीं चेतना है, राम, जाति नहीं ज्योत्स्ना है। राम को संकीर्ण दृष्टि से नहीं बल्कि विस्तृत दृष्टि से देखना चाहिए। राम, मानवीय मूल्यों के संरक्षक-संवाहक-संवर्धक होने के कारण ही तो आदर्श हैं। रामचरित मानस में तुलसी दास ने जिस राम-राज्य का वर्णन किया है, उसकी खास बात है :-

बयरू न कर काहू सन कोई, रामप्रताप विषमता खोई।

भाव- रामराज्य में न तो किसी से कोई बैर करता और न ही विषमता। इस रामराज्य की स्थापना की भारत को आज तक प्रतीक्षा है।

तुलसीदास की इस अमर कृति में वे सभी गुण विद्यमान हैं, जिन्होंने भारतीय जन-जीवन को सबसे अधिक प्रभावित किया है। इस महत्वपूर्ण कृति ने भारतीय आदर्श, नीति और संस्कृति की रक्षा की है। श्रीराम चरित मानस का मुख्य उद्देश्य मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम के लोक रक्षक चरित्र का विषद् चित्रांकन करना है। वे परम ब्रम्हा होते हुए भी इसमें एक गृहस्थ के रूप में आते है, जहाँ धीर, वीर और गंभीर व्यक्तित्व के रूप में दिखाई देते हैं, वहीं वे आज्ञाकारी पुत्र, आदर्श भ्राता, एक आदर्श पति, मित्र और राजा के रूप में दिखाई पड़ते हैं। वास्तव में इसके सभी पात्रों का व्यक्तित्व अपने आप में एक अनूठा आदर्श है, जो मानवीय मूल्य अर्पित किये है, जो राष्ट्र और काल दोनों से ही परे है.इसलिए श्रीराम चरित मानस को सार्वदेशिक और सार्वकालिक ग्रंथ कहा जाता है।

राम चरित मानस महाकाव्य में हर्ष, शोक, करूणा, प्रेम, क्षोभ, चिंता, क्रोध और शौर्य का अनूठा वर्णन है। इसमें बहुत सी शिक्षाएँ मिलती है। इसकी चरित्र के गुण हमारे लिए प्रेरणा के स्रोत है। इसमें हमें पतिव्रत-धर्म, मित्र धर्म, राजधर्म, आदि की शिक्षा बड़े ही मनोवैज्ञानिक ढंग से मिलती है। राजा और प्रजा के मध्य किस तरह का संबंध होना और इन दोनों के क्या-क्या कर्त्तव्य होते है, इनका इसमें विषद् वर्णन है। अर्थात् यह ग्रंथ नहीं श्रीराम का घर है, यानी इस ग्रंथ में साक्षात् श्रीराम निवास करते हैं।

रामचरित मानस रिश्तों का एक आदर्श ग्रंथ है। इस ग्रंथ में जीवन की हर समस्या का समाधान है। रामचरित मानस हमें हर रिश्तें को निभाना सिखाती है। हम समाज में किस तरह रहें, परिवार में किस तरह रहें, अपने कार्य-क्षेत्र में कैसे रहें, मित्रों के साथ हमारा व्यवहार कैसा हो आदि सभी बातें हम इस ग्रंथ में सीख सकते हैं।

*विभागाध्यक्ष (इतिहास) डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय, करगी रोड कोटा, बिलासपुर (छ.ग.) भारत
** एम.फिल. (इतिहास) डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय, करगी रोड कोटा, बिलासपुर (छ.ग.) भारत
*** सहायक प्राध्यापक (इतिहास) डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय, करगी रोड कोटा, बिलासपुर (छ.ग.) भारत

1. **विशेष** – रामचरित मानस के नायक राम है जो हर तरह से आदर्श है। वे आदर्श भाई हैं, एक अच्छे पति और एक राजा होने के साथ ही दृढ़ उनका व्यक्तित्व है। वहीं उनकी पत्नी सीता भी एक श्रेष्ठ पत्नी है जो रावण की लंका में रहने के बाद भी अपने पतिव्रत को बनाये रखती है। लक्ष्मण ऐसे भाई हैं जिन्होने चौदह वर्ष तक नि:स्वार्थ भाव से राम की सेवा की।

जो मन बच क्रम मम उरमाहीं, तजि रघुवी आन गति नाहीं।
तौ कृसानु सब कै गति जाना, मो कहुं होउ श्री खंड समाना ॥

भाव – सीता अग्नि परीक्षा देते हुये कहती है कि हे अग्निदेव यदि मन वचन और कर्म से मेरे हृदय में श्री रघुवीर को छोड़कर दूसरी गति (अन्य किसी का आश्रय) नहीं है, तो अग्नि देव जो सबके मन की गति जानते है, (मेरे भी मन की गति जानकर) मेरे लिये चन्दन के समान शीतल हो जाये।

2. **परिस्थिति**– राम कठिन परिस्थितियों में भी किसी व्यक्ति को विचलित न होने का संदेश देते हैं। रामचरित मानस में जिन राम का एक दिन पहले राजतिलक होने जा रहा था उन्हें सुबह वनवास पर भेज दिया जाता है। वे इस घटना से भी बिल्कुल विचलित नहीं होते बल्कि इसे अपने पिता की आज्ञा मानकर वन को चले जाते है। वे आदर्श नायक के साथ ही आदर्श पुत्र भी हैं।

होत प्रातु मुनिवेश धरि, जौं न रामु बन जाहिं
मोर मरनु राउर अजस नृप समुझिय मन माहिं

भाव – सवेरा होते ही मुनि का वेश धारणकर यदि राम वन को नहीं जाते, तो हे राजन्! मन में (निश्चिय) समझ लीजिये कि मेरा मरना होगा और आपका अपयश।

2. **नेतृत्व** – राम एक आदर्श नेतृत्वकर्ता भी है। अंगद के समुद्र लांघने के समय उसमें आत्मबल की कमी होने की बात को समझकर उसका उत्साह बढ़ाने के लिए अंगद को लंका भेजते हैं। इससे वे अंगद का उत्साह तो बढ़ाते ही हैं साथ ही रावण तक यह संदेश भी पहुँचाते हैं कि उनके साथ केवल एक हनुमान ही नहीं हैं, कई और पराक्रमी वीर भी हैं। कुशल नेतृत्व के कई उदाहरण रामचरित मानस में मिलते हैं।

तू दसकंठ भले कुल जायो।
ता महं सिव-सेवा।
बिरंचि-बर, भुजबल बिपुल जगत जस पायो ॥1॥
खर-दूषन त्रिसिरा, कबंध रिपु जेहि बाली जमलोक पठायो।
ताको दूत पुनीत चरित हरि सुभ संदेश कहन हौं आयो ॥2॥
श्रीमद नृप-अभिमान मोहबस, जानत अनजानत हरि लायो।
तजि ब्यलीक भजु कारूनीक प्रभु, दै जानकिहि सुनहि समुझायो ॥3॥
जातें तव हित होइ, कुसल कुल, अचल राज चलिहै न चलायो।
नाहित रामप्रताप-अनलमहँ है पतंग परिहै सठ धायो ॥4॥
जद्यपि अंगद नीति परम हित कहो, तथापि न कछु मन भायो।
तुलसीदास सुनि बचन क्रोध अति, पावक जरत मनहु घृत नायो ॥5॥

4. **समाज**– समाज के लिए रामचरित मानस में कई आदर्श उदाहरण हैं। राम का समाज के नियमों के पालन के लिये सीता का त्याग करना यह सिखाता है कि हमें समाज में किस तरह से रहना चाहिए। आदर्श समाज की रचना के लिए अपने सुखों का त्याग और न्याय की समानता का आदर्श भी प्रस्तुत करते हैं।

श्वश्रूणामविषेषेण प्राञ्जलिप्रग्रहेण च।
शिरसा वन्द्य चरणौ कुशलं ब्रूहि पार्थिवम् ॥
शिरसाभिनतो ब्रूयाः सर्वासामेव लक्ष्मण।
वक्तव्यश्चापि नृपतिर्धर्मेषु सुसमाहितः ॥
जानासि च यथा शुद्धा सीता तत्त्वेन राघव।
भक्त्या च परया युक्ता हिता च तव नित्यशः ॥
अहं त्यक्ता च ते वीर आयशोभीरूणा जने।
यच्च ते वचनीयं स्यादपवादः समुत्थितः ॥
मया च परिहर्तव्यं त्वं हि म परमा गतिः।
वक्तव्यश्चैव नृपतिर्धर्मेण सुसमाहितः ॥
यथा भ्रातृषु वर्तेथास्तथा पौरेषु नित्यदा।
परमो ह्येष धर्मस्ते तस्मात्कीर्तिरनुत्तमा ॥
यत्तु पौरजने राजन् धर्मेण समवाप्नुयात्।
अहं तु नानुषोचामि स्वशरीरं नरर्षभ ॥
यथापवादं पौराणां तथैव रघुनन्दन।
पतिर्हि देवता नार्याः पतिर्बन्धु पतिर्गुरूः ॥

रामचरित मानस का हर किरदार ऐसा है जो जन सामान्य के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करता है। अपनी जिंदगी की किसी भी कठिन परिस्थिति में निर्णय कैसे लें ? यह भी रामचरित मानस से सीख सकते हैं।

रामराज्य या कल्याणकारी राज्य तभी संभव होता है, जब पारिवारिक जीवन शुद्ध एवं मर्यादा युक्त हो, पिता-पुत्र, पति-पत्नी, सास-बहू इत्यादि का पारस्परिक संबंध एवं व्यवहार यदि मर्यादा पूर्ण एवं विवेक-युक्त होगा तो सामाजिक जीवन स्वस्थ रहेगा। भाई-भाई के बीच स्नेह, विश्वास और प्रेम होना चाहिए।

कारन कवन नाथ नहीं आयउ
जानि कुटिल किधौं मोहि बिसरायउ
अहह धन्य लछिमन बड़ भागी।
राम, पदान बिंदु अनुरागी ॥

भाव –अभी राम क्यों नहीं आये ? मुझे कुटिल मानकर भूल तो नहीं गये ? ऐसे विचार मन में आने लगे। फिर परमात्मा को याद करते हुए लक्ष्मण जी को धन्यवाद देने लगे। लक्ष्मण, तेरे जैसा भाग्यशाली कौन हो सकता है। रामचरणों का अनुरागी बनकर अखंड सेवा का लाभ तुझे मिला।

वैज्ञानिक प्रगति ने आज मानव जीवन को सुखी बनाया है, किन्तु प्रसन्न बनाया है ? खाने-पीने,उठने-बैठने जैसी साधारण सी बातों को लेकर समस्या पैदा हो रही है। भौतिकवाद ने मनुष्य को आत्म केन्द्री बनाया है। त्याग के स्थान पर परिग्रह का महत्व अत्र-तत्र-सर्वत्र दृष्टिगत होता है। इसका मूल कारण है अध्यात्म की विस्मृति अर्थात् मानव जीवन के शाश्वत मूल्यों की उपेक्षा। आज काम राज्य, दाम राज्य और जाम राज्य (मद्यपान) ने मनुष्य जीवन को बुरी तरह घेर लिया है।

विश्वबंधुत्व की भावना की विस्मृति विश्व को भय ग्रस्त बना रही है।

श्रीराम सगुण या निर्गुण ब्रम्हा, अवतार, विश्व रूप, चराचर, व्यक्त जगत, सेवा प्रधान, परहित निरत, आधि-व्याधि-उपाधि, रहित जीवन, मनवाणी और कर्म की एकता, उदार, सत्यनिष्ठ, समन्वय दृष्टि, अन्याय के प्रतिरोध के लिये वज्र-कठोर, प्रेम करूणा के लिये कुसुम, कोमल चित्त, गिरे हुए को उठाने और आगे बढ़ने की प्रेरणा तथा आश्वासन भोग की तुलना में तप को प्रधानता देने वाला विवेकपूर्ण, संयत आचरण, दारिद्रय् मुक्त, सुखी, सुशिक्षित समृद्ध, समता युक्त समाज, साधुमत और लोकमत का समादर करने वाला प्रजाहितैशी शासन संक्षेप में यही आदर्श प्रस्तुत किया है-

तुलसी की मंगल करनि, कलिमल हरनि, वाणी ने
होई है सोई जो राम रचि राखा, को करि तरक बढ़ावहि साखा

भाव – जो भगवान श्रीराम ने पहले से रच रखा है। वही होगा, हमारे कुछ

करने से वह बदल नहीं सकता

मंगल भवन, अमंगल हारी, द्रवहु सो दशरथ अजिर बिहारी।

अर्थात् जो मंगल करने वाले हैं और अमंगल को दूर करने वाले हैं, वे दशरथ नन्दन श्रीराम हैं, वे मुझ पर अपनी कृपा करें।

इस प्रकार राम चरित मानस से समाज को एक नई दिशा मिलती है। वर्तमान में इसका पालन करना समाज को एक नई दिषा की ओर अग्रसर करना, समाज की बुराइयों को समाप्त करना तथा एक स्वच्छ एवं स्वस्थ समाज का निर्माण कर प्रगतिशील बनायें रखने की प्रेरणा मिलता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. महर्षि वाल्मिकी - रामायण
2. गोस्वामी तुलसीदास - रामचरित मानस
3. गोस्वामी तुलसीदास - विनय पत्रिका
4. गोस्वामी तुलसीदास - कवितावली
5. गोस्वामी तुलसीदास - गीतावली
6. पं. श्रीराम शर्मा आचार्य - रामायण की प्रगतिशील प्रेरणायें
7. जयदयाल गोयन्दका - रामायण के कुछ आदर्श पात्र
8. श्री अंजनी नंदन शरण - मानस पीयुष
9. कल्याण - गीता प्रेस की मासिक पत्रिका
10. पूज्य मुरारी बापू - रामायण रसामृत
11. आस्था एवं संस्कार चैनल- रामकथा प्रवचन
12. स्वामी रामसुख दास - कर्म रहस्य
13. राम किंकर महाराज - तुलसी की दृष्टि
14. हनुमान प्रसाद पोद्दार - भवरोग की रामबाण दवा
15. श्रीमद्भागवत गीता
16. अध्यात्म परिषद् खरौद
17. सुमंत मुरंजन - पुरोहित वर्ग वर्चस्व और भारतीय समाज
18. पंडित रामकुमार के हस्तलिखित टिप्पणी
19. दैनिक समाचार पत्र- नई दुनिया, पत्रिका

****